2017-18

समकालीन भारतीय साहित्य : विविध विमर्श

विविध विधाओं के संदर्भ में

भाग -१

प्रधान संपादक

प्रो. सीताराम के. पवार

सह संपादक

प्रो. प्रभा भट्ट

डॉ. एल. पी. लमाणी

डॉ. शीला. चौगुले

डॉ. नीता दौलतकर

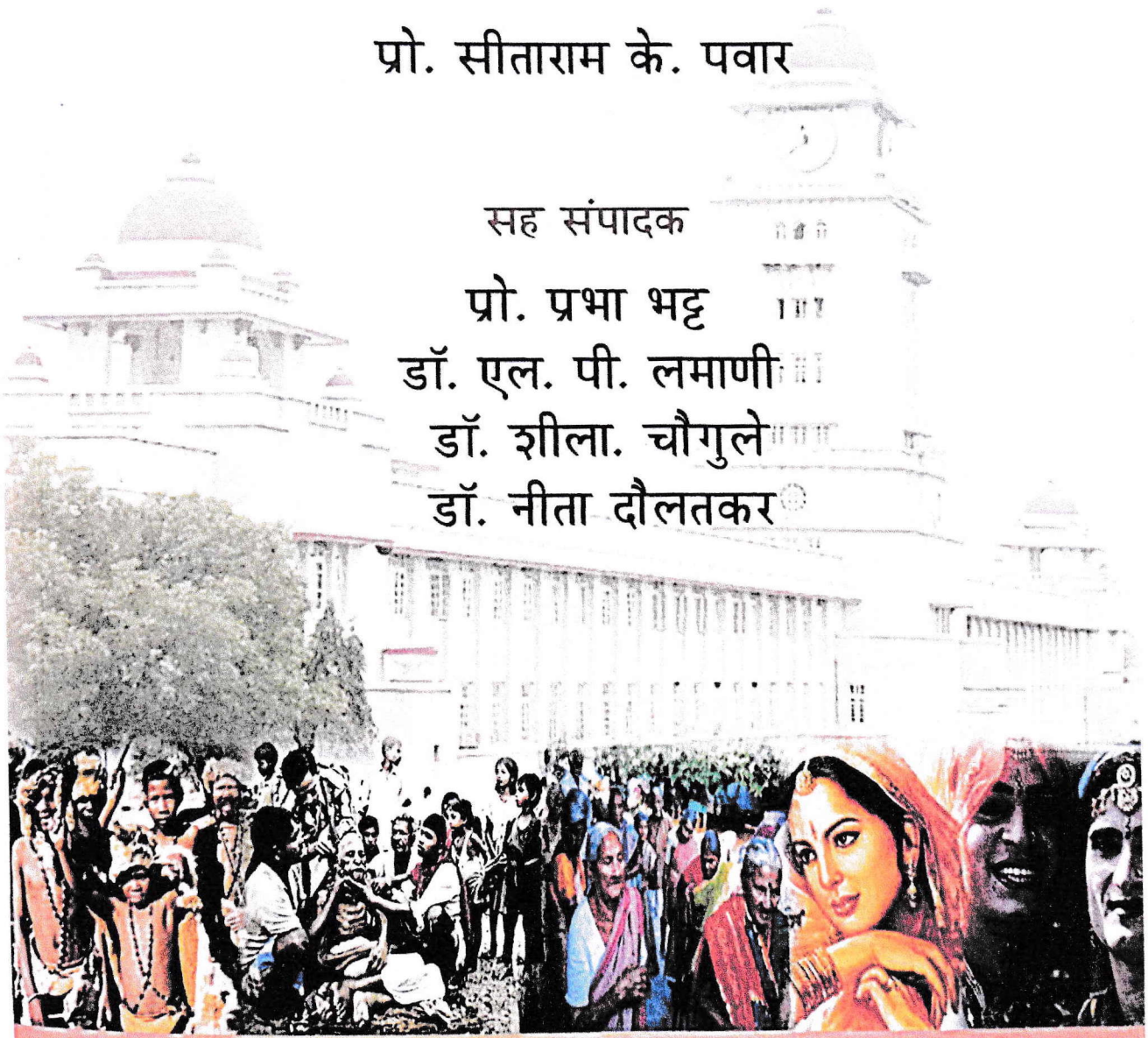

हिन्दी विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड

समकालीन हिन्दी साहित्य : विविध विमर्श

भाग – I

प्रधान संपादक

प्रो. सीताराम के. पवार

विभागाध्यक्ष एवं निदेशक

हिन्दी विभाग

कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड

सह संपादक

प्रो. प्रभा भट्ट

डॉ. एल. पी. लमाणी

डॉ. शीला चौगुले

डॉ. नीता दौलतकर

अमन प्रकाशन, कानपुर, (उ.प्र)

समकालीन हिन्दी साहित्य : विविध विमर्श

(Collective Essays Presented at International Conference on "Diverse Criticism in Contemporary Indian Literature)

प्रधान संपादक : प्रो. सीताराम के. पवार

© : प्रधान संपादक

प्रकाशक : अमन प्रकाशन कानपुर

मुद्रक : सरस्वति प्रिंटर्स, धारवाड

वर्ष : २०१८

पृष्ट : ६३१+१२

ISBN : 978-93-86604-74-3

मूल्य : ३००

प्रतियाँ : ३००

सभी हक सुरक्षित है ।

प्रस्तुत पुस्तक में प्रकाशित आलेख, विभिन्न विचार, आदि लेखक के हैं । अतः संपादक, संपादक मंडल, मुद्रक तथा प्रकाशन इसके लिए जिम्मेदार नहीं है ।

168.	वृद्ध विमर्श	सुनिता रा. हुन्नरगी	469
169.	समकालीन हिंदी साहित्य : विविध विमर्श – दलित विमर्श	प्रो.शंकर मूर्ती. के.एन.	471
170.	आत्मकथात्मक उपन्यास दोहरा अभिशाप में चित्रित दलित जीवन का दर्दनाक यथार्थ	निशा मुरलिधरन	473
171.	विवेकी राय के उपन्यासों में अभिव्यक्त दलित समाज का यथार्थ	शिंगाडे सचिन सदाशिव	475
172.	समकालीन हिन्दी साहित्य किन्नर विमर्श	डॉ.चिलुका पुष्पलता	477
173.	परित्यक्त किन्नरों की कथा – व्याथा	डॉ. राजशेखर.उ.जाधव	479
174.	हिन्दी कहानियों में किन्नरों का स्वागत	डॉ. मीनाक्षि पाटिल	481
175.	अपना लिंग उन्हें चुनने की स्वतंत्रता दीजिए	डॉ. पवन कुमार	483
176.	समकालीन हिन्दी साहित्य में अल्पसंख्यक विमर्श	प्रो. एम.एस.हुलगुर	485
177.	स्त्री विमर्श: हिन्दी साहित्य के संदर्भ में	Dr. Mallikarjunayya G.M	487
178.	मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में स्त्री विमर्श	प्रा. रईसा मिझा	489
179.	स्त्री विमर्श ? एक अध्ययन	एम.आई. चिन्दी	491
180.	समकालीन हिंदी कहानियाँ और स्त्री विमर्श	शक्तिराज	493
181.	समकालीन हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श	डॉ.मालती प्रकाश	495
182.	"महिला उपन्यास लेखन एवं स्त्री विमर्ष"	लेफ्टनंट डॉ.रविंद्र पाटील	497
183.	समाज के परित्यक्त किन्नर वर्ग की व्यथा कथा ।	डा. सुजाता पी. फातरपेखर	499
184.	समकालीन हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी विमर्श	वी. गीता मालिनी	501
185.	ङ्शपाल के उपन्ङ्गासों में स्त्री - विमर्श	वैशाली महादेव जाधव	503
186.	स्त्री - विमर्श	यविजयश्रि भि गुडी	505
187.	आधुनिक हिंदी उपन्यासों में नारी विमर्श	डा. उमा आर. हेगडे	507
188.	मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में नारी विमर्श	प्रो.हसनखादी.एम.	509
189.	स्त्री विमर्श: हिन्दी समकालीन उपन्यास साहित्य के संदर्भ में।	प्रतीक माली	511
190.	दलित साहित्य हिन्दी साहित्य में दलित विमर्श	आनंद नायक	513
191.	उषा प्रियम्वदा के उपन्यासों में नारी विमर्ष	डॉ. हिंदुराव रा. घरपणकर,	514
192.	समकालीन हिंदी कविताओं में स्त्री–विमर्ष	सौ. सुगंधा हिंदुराव घरपणकर	517
193.	समकालीन कथा साहित्य में स्त्री विमर्श के मुद्दे	रजनी शाह	520
194.	भारतीय पाश्चात्य स्त्री विमर्श ? एक अध्ययन		522
195.	लिम्बाले की कहानियों में अभिव्यक्त सामाजिक परिवेष (दलित परिप्रेक्ष्य में)	लक्ष्मी प्रसाद कर्श	524

"महिला उपन्यास लेखन एवं स्त्री विमर्ष"

लेफ्टनंट डॉ.रविंद्र पाटील

स्त्री विमर्ष का तात्पर्य है स्त्रीवादी दर्शिटकोण तथा स्त्री से संवंधित विभिन्न पहलुओं पर विचार एवं विमर्ष ऐसे विभिन्न कारण एवं समस्याएँ हैं जो वर्तमान परिवेष में स्त्री चिंतन को व उत्पन्न हुई है। परिणाम के चलते आज स्त्री की स्थिति के संवंध में व्यापक रूप से विचार मंथन हो रहा है। इसके संदर्भ में डॉ.कीर्ति मिश्रा लिखती है, "भारतवर्ष में इन विचारधारा का उद्भव बीसवीं षताव्दी में हुआ। वैसे तो स्त्री समर्थक विचारधारा प्राचीनकाल से ही अपने अस्तित्व में है पर इसका विस्तार पूर्व एवं पष्चिम दोनों में ईसाइत के संदर्भ में दर्शिटगोचर होता है।"1

स्वतंत्रताप्राप्ति के वाद उपन्यास विधा को समप्द्ध करने में महिला उपन्यासकारों महत्वपूर्ण योगदान रहा है। स्त्री होने के कारण इन लेखिकाओं ने पुरूशों से भी सूक्ष्म चित्रांकन किया है। इन स्त्री उपन्यासकारों ने लेखन में नारी अस्मिता की तलाष अत्यंत गहराई से की है। नारी को एक नई पहचान देने के साथ–साथ हिंदी उपन्यास साहित्य की संवेदना और अनुभव की सिमाओं को भी वाया है। इन्होंने 'पुरूश' लेखन के मुकावले 'स्त्री लेखन' को अधिक प्रभावपाली और असरदार ठहराने की कोषिष भी की है। ये लेखिकाएँ ज्यादा आक्रमक भाव से स्त्री की अलग अस्मिता, स्त्री की पहचान, संघर्श आदि वातों का विप्लेशण अपनी रचनाओं में करती है।

स्त्री विमर्ष से संवंधीत हिंदी के महिला उपन्यासकारों में कष्णा सोवती, उशा प्रियवंदा, पषिप्रभा पास्त्री, श्रीमती मेहरून्निसा परवेज, मन्नू भंडारी, कुसुम अंसल,·दिप्ति खंडेलवाल, मप्दुला गर्ग, मणाल पांडेय, आदि नाम सम्मान के साथ लिया जा सकता है।

1.0 कृश्णा सोबती इनके लेखन में स्त्री की एक अलग छवि उभरकर सामने आयी है। 'डार से बिछुडी', 'मित्रो मरजानी', 'ऐ लडकी', 'सूरजमुखी अंधरे के', इन कृतियों मे उनकी नारीवादी चेतना स्पश्ट रूपसे दिखाई देती है।

मित्रो मरजानी उपन्यास की नायिका मित्रो अर्थात सुमित्रावंती चुनौती के रूप में प्रस्तुत है। मित्रों पंजाव क्षेत्र के मध्यमवर्गीय परिवार की वहू वनकर आती है। वह वहू बनके रहने के परंपरागत तरिकोंसे नफरत करती है। वह रूमिंझली वहू ने ऐसा सब कुछ नहीं किया। वडी–वडी भूरी आँखे कृघरवाले का सामना किए रहीं।"2 अतः विवेच्य उपन्यास में मित्रों मरजानी के रूप में निर्भयी, वाचाल, तथा कोमल चरित्र का चित्रण लेखिका ने किया है। मित्रों में यौवन की प्यास है "सच तो यूँ जेठजी कि दीन दुनीया विसार मैं मनुश्य की जात से हंस खेल लेती हूँ, झूठ यूँ कि स्वसम का दिया राजपाट छोड मैं कोठे पर तो नहीं जा वैठी।"3 मित्रों अपने व्यक्तित्व को विखरने नहीं देती। उसका प्रेम वासना में परिणत हो जाता है। वह नारी के सभी पुराने विम्वों को चुनौती देती है। अतः कृश्णा ने मित्रों के रूप में एक ऐसी नारी हिंदी उपन्यास साहित्य को दी है जो सामर्पित

होते हुए भी महण की आकंपा रखती है। इसके अलावा 'डार से बिछुड़ी' और 'सुरजमुखी अँधेरे के' आदि उपन्यासो मे भी स्त्री विमर्ष का चित्रण हुआ है।

2.0 उशा प्रियवंदा – आधुनिक महिला साहित्यकारों मे उशा प्रियंवदा का महत्वपूर्ण स्थान है। हिंदी भाशा पर उनका जितना अधिकार है उतना ही अधिकार अंग्रेजी भाशा पर भी है। उन्होंने उपन्यासों में आधुनिक षिक्षित नारी की दुविधा ऊब, घुटन तथा छटपटाहट का चित्रण किया है।

'रूकोगी नहीं राधिका' विवेच्य उपन्यास उच्चवर्गीय सामाजिक चेतना को उदघाटीत करता है। इसमे भारतीय तथा पाष्चात सभ्यता का खुलकर लेखन हुआ है। इसमें जीवन की भावहीनता, बौद्धिकता तथा भौतिकता के परिणामस्वरूप पारिवारिक संबंधों के टूटन को भलीभाँति रेखांकित किया है। राधिका स्वतंत्र विचारोंवाली नारी है। वह अक्षय को जीवन साथी के रूपमें पाना चाहती है। वह कहती है, ''हो सकता है मैं अक्षय से विवाह कर लूँ मेरे जीवन में प्ले बॉय के लिए स्थान नहीं है। मैं संगी चाहती हूँ, जिसमें स्थिरता हो, औदार्य हो मुझे मेरे सारे अवगुणो सहित स्वीकार कर ले। मेरे अतीत को झेल ले।''4 विवेच्य उपन्यास में राधिका पिता के विवाह को इस हद तक नापसंद करती है कि वह घर छोडकर विदेष चली जाती है। इसके अलावा उशाजी की 'पचपन खंबे लाल दीवारे' उपन्यास में भी स्त्री विमर्ष का चित्रण हुआ है। इसमें नायिका सुशमा केंद्रीय पात्र रहीं है। सुशमा उपन्यास के हर प्रसंग में संघर्श करती हूई नजर आती है।

3.0 'मन्नु भंडारी' हिंदी के आधुनिक महिला उपन्यासकारों में मन्नु भंडारी का स्थान उच्च कोटी का है। उनके उपन्यासों का मुख्य आधार वैयक्तिक चेतना है। इनका उपन्यास साहित्य जीवन के अधिक निकट है। इसमें पति–पत्नि के संबंधों, पारिवारिक जीवन और आधुनिक प्रेम आदि का चित्रण है।

'एक इंच मुस्कान' यह उपन्यास मन्नुजी का अद्वितीय उपन्यास है। इसमें आधुनिक जीवन के खंडित जीवन का चित्रण है। इसमें परिवर्तित सामाजिक, आर्थिक तथा पारिवारिक परिस्थितियों का यथार्थ अंकन है। प्रस्तुत उपन्यास की स्त्री पात्र षकुन पति परित्यक्ता नारी है और पति के द्वारा त्यागे जाने पर उसके मध्यमवर्गीय परिवार के रू''माँ बाप ने परित्यक्ता बेटी का मुँह देखने से इन्कार कर दिया मेरे मन में अपने आप ही एक तुलना चलती नहीं, एक अमला है बैठी है और घुरती है। एक यह है कैसे आत्मविष्वास और साहस से जिंदगी का सामना करती चली आ रही है।''5 इसके अलावा 'आपका बंटी' उपन्यास में स्त्री विमर्ष का चित्रण हुआ है। इस उपन्यास में तलाक षुदा पति–पत्नी और उनकी षिषु संतान को केंद्र में रखकर आधुनिक स्त्री के जटिलतापूर्ण जीवन चित्रण किया है। दाम्पत्य जीवन का विघटन और नये सिरे से नए संबंध बनाकर जीने को आग्रह आधुनिक नारी जीवन की एक सच्चाई है।